आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2532 • उदयपुर, मंगलवार 30 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

खुर्जा (उत्तरप्रदेश) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण, दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के खुर्जा, जिला–बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश आश्रम में संपन्न हुआ।

इस शिविर में 19 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 07 के लिये कैलिपर्स की सेवा सराहनीय हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री हरपाल सिंह जी (पूर्व विधायक खुर्जा), अध्यक्षता श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान महोदय, खुर्जा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान जयप्रकाश जी चौहान, श्रीमान राजप्रताप सिंह जी (समाज सेवी), श्रीमान योगेन्द्र प्रताप जी राघव (सेवा प्रेरक एवं संयोजक) कृपा करके पधारे और संस्थान की सेवा प्रकल्पों की सराहना की।

टेक्नीशयन टीम में श्री नाथूसिंह जी, शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट का पूर्ण योगदान रहा।

बीदर (कर्नाटक) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के पन्नालाल हिरालाल कॉलेज परिसर, बीदर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता श्री भगवत जी खुबा (रसायन उर्वरक राज्य मंत्री, भारत सरकार) द्वारा शिविर में 225 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 25, कैलीपर्स माप 12, ट्राईसाईकल 15, व्हीलचेयर 05, वैशाखी 25 जोड़ी तथा ऑपरेशन चयन 08 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री भगवत जी खुबा (रसायन एवं उर्वरक तथा नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा राज्य मंत्री, भारत सरकार), अध्यक्षता श्री राजकुमार जी अग्रवाल (उघोगपति एवं समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि ब्रिजकिशोर जी, श्री आर. जी. अग्रवाल, श्री सत्यभूषण जी जैन (उघोगपति एवं समाजसेवी), शिविर कोडिनेटर बीदर, श्री नाथुसिंह जी (टेक्नीशियन), डॉ. अजमुदीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री महेन्द्र सिंह जी रावत सहायक ने भी सेवायें दी।

टीना थामेगी अब कलम

भोपाल(मध्यप्रदेश) के सूखी सेवनिया कस्बे को टीना(5) अब अन्य बच्चों की तरह अपने हाथ में भी पकड़ सकेगी कलम और लिखेगी अपने सुखद भविष्य की इबारत। इस बालिका के जन्म से ही दांए हाथ का पंजा (हथेली) विकसित नही हुई थी। सिर्फ कलाई पर नन्हीं–नन्हीं उंगलियां थी। माता–पिता अनीता व बबलू कुशवाह बच्ची की इस जन्मजात कमी से काफी दुःखी थे। जनवरी 2021 में भोपाल में संस्थान की ओर से . त्रिम अंग(हाथ–पैर) माप शिविर भोपाल उत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ। जिसमें माता–पिता टीना को लेकर गए जहां उसके लिए कोहनी तक . त्रिम हाथ बनाने का माप लिया गया। 6 माह बाद 25 जून 2021 को यह हाथ टीना को लगा दिया गया। हाथ लगाने के साथ ही संस्थान में उसकी माता को इस बात का प्रशिक्षण भी दिया गया कि हाथ का संचालन और रख–रखाव किस प्रकार होगा। टीना और माता–पिता अब बेहद खुश हैं। टीना कहती है कि अब वह खुशी–खुशी स्कूल जाएगी और खूब लिख–पढ़ कर जिंदगी के लम्बे सफर को सुखद बनाएगी।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पांव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गांव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गांव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पांव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुंचे। जहां उनके दोनों कटे पांव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूं और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

संस्थान के प्रयास से जन्म से ही दिव्यांग विनोद चलने लगा

विनोद सराठे (27), पिता : पुरूषोत्तमदास जी, शहर पिपरिया, जिला–हौशंगांबाद (मध्यप्रदेश) में 27 वर्षों से लकड़ी के सहारे चलने वाले विनोद का जीवन निराशामय था। इलाज के लिए विनोद को कई बड़े शहरों में दिखाया गया, लेकिन पांव से दिव्यांग विनोद की हालत दिन–दिन बिगड़ती ही गई।

इसी बीच टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर विनोद के हृदय में आशा की किरण जगी और वह अपनी पत्नी के साथ उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान पहुँचा। जांच के बाद विनोद के घुटने का निःशुल्क ऑपरेशन हुआ। 27 वर्षों से लकड़ी के सहारे चलने वाले विनोद की लाठी अब छूट चुकी थी और कैलिपर पहनकर आसानी से चलने लगा है। विनोद इसे अपने जीवन की नई शुरूआत मानता है।

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

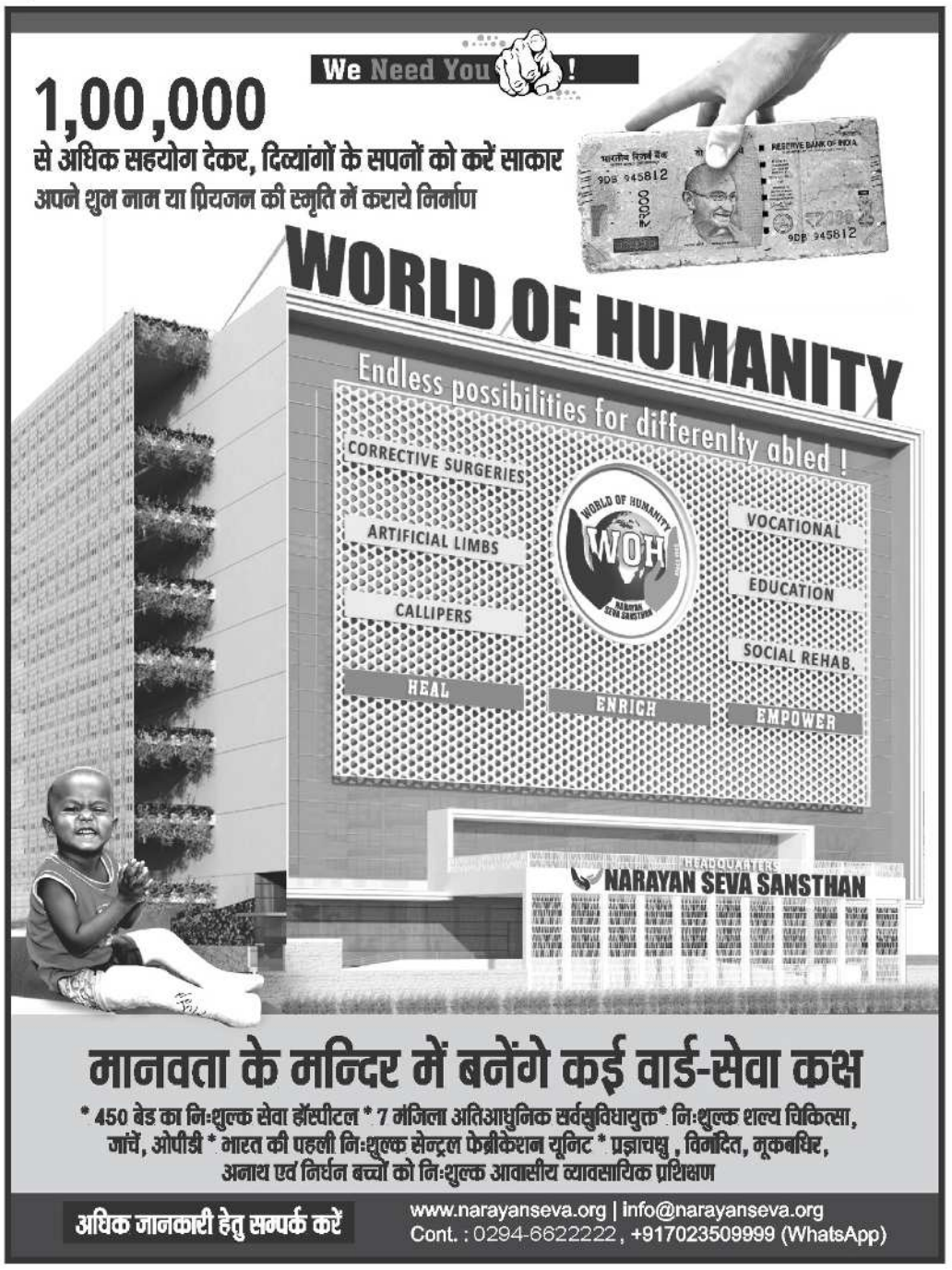

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मैं अभी कुछ दिनों पहले वाराणसी जाने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाभैरव जी के दर्शन, बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन राधे ज्योतिर्लिंग में बने। मेरे पिताश्री जी तो बहुत शंकर भगवान की अर्चना बिना तो उनसे रहा ही नहीं जाता था। रोज अभिषेक करना। रोज बिल्वपत्र शंकर भगवान के अभिषेक के साथ चढ़ाते नहीं थे तब तक उनको सुख नहीं मिलता था, तब तक उनको शांति नहीं मिलती थी। एक बार तो अमृतसर में विवाह में गये। मुझे रास्ते में कह रहे थे कैलाश मेरे मन में एक ही बार –बार आता है वहाँ बिल्वपत्र मिलेंगे के नहीं मिलेंगे? और जब उस हिमालय पर गये बाहर ही बिल्वपत्र लिये एक माता जी बैठी हुई थी पिताजी का दिल तो प्रसन्न हो गया। यही प्रसन्नता है यही प्यार है, यही मोहब्बत है। छोटे –छोटे बच्चे तो इन प्लास्टिक के खिलौने से भी राजी हो जाते है।

नदिया ना पिए कभी अपना जल,
वृक्ष ना खाए कभी अपने फल।
अपने तन का मन का धन का दूजों को दे दान है,
वो सच्चा, अरे इस धरती का भगवान है।।

भाया इसलिए में वाराणसी गया तो अस्सी घाट पर जाने का सौभाग्य मिला। अस्सी घाट हमारे लालवाणी साहब लेकर गये। वहाँ के स्थानीय संयोजक महोदय लालवाणी साहब लेकर गये अस्सी घाट पर मैं प्रमुदित हो गया। मैंने उस धरती पर लोट– पोट किया। मेरे आँखों के आंसुओं से वो घाट गिला हो गया। गंगा जी का स्नान किया, गंगा जी का आचमन किया और इसी घाट पर हुलसी का बेटा तुलसी जिसके जन्म से 32 दाँत आये। लोगों ने कहा मूल नक्षत्र में जन्म हुआ है। ये माता –पिता के लिए भारी पड़ेगा, ये पिता–माता के लिए कष्टदायी बनेगा इसको त्याग दो। माता बिचारी इतनी डरी अपनी दासी को कहा, अपनी सिस्टर को कहा इस बच्चे को बचा लेना। किस –किस युग में कितनी – कितनी कुरीतियां फैल गयी। बच्चा मूल नक्षत्र में जन्म हुआ तो वध कर देंगे, मार डालिये अनाथ, पापियों ऐसा ना करो।

सम्पादकीय

छल, कपट व झूठ जीवन के नकारात्मक पहलू हैं। जीवन में जब भी नकारात्मकता का प्रवेश होता है तभी हमारा आभामंडल सिकुड़ने लगता है। हमारी आत्मीय चमक फीकी होने लगती है। हमारी केवल और केवल सकारात्मक विचारों की नींव पर खड़ी इमारत है। इसकी दृढ़ता बनाये रखने के लिए नकारात्मकता की दीमक से बचाना जरूरी है। दुनिया के इतिहास को देखें तो छल, कपट या झूठ से जिसने भी सफलता अर्जित की है, उसकी सफलता कहाँ टिक पाई है। उदाहरण तो ऐसे हैं कि उस सफलता के बाद ऐसी गिरावट आई कि अर्जित तो गया ही, साथ में संगृहीत भी नहीं रहा। छल, कपट और झूठ कभी भी लम्बे समय तक चल नहीं सकते। यहाँ तक कि इन बुराइयों का प्रयोगकर्त्ता भी हर समय सशंक रहता है। वह भी प्रतिक्षण इस भय में जीता है कि कहीं पोल न खुल जाए। जो सफलता भय पर आधारित होगी, वह कैसे टिकेगी। इसलिए इनसे बचना ही उपाय है।

कुछ काव्यमय

छल व्यवहार चले नहीं,
ईश्वर के दरबार।
कपट झूठ त्यागे बिना,
मिले न प्रभु का प्यार।।
छल से पाई सफलता,
कितना देगी साथ।
साथ सत्य का छूटता,
होते तभी अनाथ।।
कहते हैं होते नहीं,
कभी झूठ के पैर।
फिर कैसे अपने सधे,
गैर रहेंगे गैर।।
हमने सुना कि कपट का,
ना चलता व्यापार।
औरों की तो हानि है,
खुद का बंटाधार।।
कचरा फेंको कपट का,
फेंक दीजिये झूठ।
छल से सींचोगे अगर,
जीवन होगा ठूंठ।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

कृतज्ञता भाव

कहते हैं कृतघ्न के शव को कुत्ते भी नहीं खाते, जबकि कृतज्ञ को स्नेह–सम्मान सुख वैभव अनायास ही मिल जाते हैं। कौन है कृतघ्न, और कौन कृतज्ञ, शास्त्रकारों, भाषा–शास्त्रियों ने इस प्रश्न की सुन्दर व्याख्या की है। 'कृतं जानानीति सः कृतज्ञः' अर्थात् अपने प्रति (दूसरों द्वारा) किये गये स्नेह–करूणा–दान–सहयोग– सेवा–उपकार को जो सदैव जानता है, (स्मरण रखता है) वह 'कृतज्ञ' है। और 'कृतं हन्तीति सः कृतघ्नः' अर्थात् अपने प्रति (दूसरों द्वारा) किये गये स्नेह–करूणा –उपकार आदि का जो वध करता है। (विस्मरण करता है, भुला देता है) वह 'कृतघ्न' है।

प्रभु कृपा से हमने मानव जीवन पाया है। प्रभु कृपा से ही आकाश–वायु–जल– अग्नि–पृथ्वी ने शब्द–स्पर्श–रूप–रस –गन्ध से हमारा पोषण किया है, हमें अन्न–वस्त्र–आवास–वैभव–परिवार–समाज मिला है। उसी प्रभु के प्रसाद से

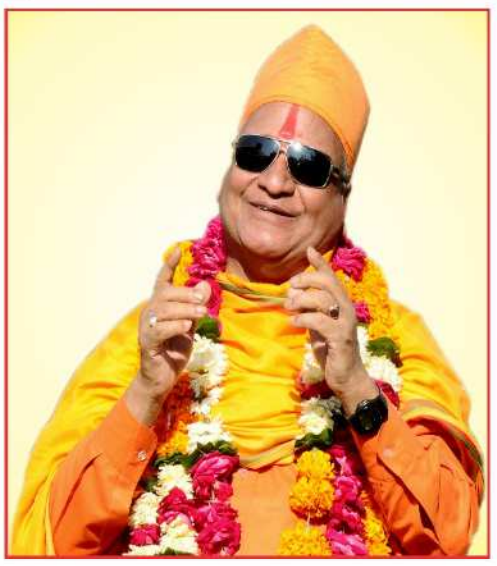

हमारे जीवन में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्'का प्रसार होता है। हम ये भाव मन में निरन्तर स्थिर रखते हुए उस प्रभु के प्रति आभारी बने रहें, यही 'कृतज्ञ' होने का भाव है। आपने टी.वी. चैनल्स, सन्दीपन अथवा शिविर, समारोह आदि में संस्थान के सेवा प्रकल्पों से प्रेरणा लेकर किसी दिव्यांग के लिए ऑपरेशन सहयोग, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, निर्धन हो अन्न–वस्त्र, रोगी को दवाई, दुःखी को सहानुभूति के रूप में प्रभु कृपा से कोई न कोई सेवा अवश्य की होगी। आप द्वारा की गई आपने टी.वी. चैनल्स, सन्दीपन अथवा शिविर, समारोह आदि में संस्थान के सेवा प्रकल्पों से प्रेरणा लेकर किसी दिव्यांग के लिए औपरशन सहयोग, भूखे को भोजन, प्यासे का पानी, निर्धन को अन्न–वस्त्र, रोगी को दवाई, दुःखी को सहानुभूति के रूप में प्रभु कृपा से कोई न कोई सेवा अवश्य की होगी।

आप द्वारा की गई ज्ञात–अज्ञात उन सभी सेवाओं के लिए आपके प्रति मेरे कृतज्ञता भाव। आइये। प्रतिदिन प्रातः उठते ही (कम से कम 15 सेकण्डस के लिए) प्रभु से हमें प्राप्त उस पूर्वोक्त कृपा प्रसाद के लिए हम प्रभु के प्रति कृतज्ञता भाव से अन्तर्मन को लबालब करते हुए बन्द आँखों से इस तरह भाव विह्वल हो कि आनन्द की स्पष्ट झलक न केवल हमारे चेहरे पर, अपितु तन–मन, रोम–रोम में व्याप्त हो जाय।

दोनों हाथ ऊपर उठाये तीन बार उस कृतज्ञता आह्लाद के लिए वाह! वाह! वाह! शब्दों का उच्चारण करें।' प्रभु कृपा से प्रभु के प्रति कृतज्ञता भाव हमारा जीवन प्रशस्त करे– इस मंगल कामना के साथ।

–कैलाश 'मानव'

सेवा की शक्ति

छोटा चन्द्रमा बड़े सूर्य को भी ग्रहण लगा देता है। अगर हम सही जगह पर, सही समय पर, सही काम करें, तो हम भी बड़े–बड़े काम कर सकते हैं।

एक बार संत राबिया काबा के दर्शन के लिए जा रही थीं। संत राबिया एक सूफी संत थीं। उन्होंने गरीबों और दुःखियों की सेवा को ही पैगम्बर सेवा समझा था। वह किसी भी मंदिर–मस्जिद में नहीं जाती थीं, लेकिन परिवार के कहने से काबा जाने के लिए राजी हुईं।

काबा जाते हुए जब रास्ते में वे एक जंगल से गुजरीं, तो उन्हें एक सूखे हुए पेड़ के खोल में, एक कुत्ता फंसा हुआ दिखा। राबिया को दया आ गई

और उन्होंने उसे पेड़ से निकालकर अपनी गोद में उठा लिया। उन्होंने देखा कि कुत्ता प्यासा है। इधर–उधर पानी ढूंढने की कोशिश की तो कुछ दूरी पर एक कुआँ नजर आया। कुएँ के पास जाने पर पता चला कि वहाँ पर बाल्टी तो थी पर रस्सी नहीं थी।

उनकी नजर अपने कपड़ों पर जाती है। उन्होंने बिना वक्त गंवाए अपने कपड़ों को फाड़कर रस्सी बनाई और बाल्टी को उससे बांधकर कुएँ में भरने के लिए डाला, परन्तु रस्सी पानी से थोड़ी दूर रह गई, उनको बहुत दुःख हुआ। संत राबिया दुःखी मन से तरकीब ढूंढ़ने लगीं। तभी उनका ध्यान अपने केशों पर गया, जो बहुत लंबे थे।

उनके मन में जीव सेवा की भावना इतनी प्रबल थी कि उन्होंने दर्द की परवाह किए बिना तुरंत अपने केशों को जड़ से उखाड़ लिया और रस्सी से जोड़ दिया। लम्बे केशों के रस्सी के साथ जुड़ते ही रस्सी लंबी हो गई और बाल्टी पानी तक पहुँच गई। संत राबिया ने 5–6 बार पानी निकाल कर उस मरणासन्न कुत्ते को पिलाया, जिससे वो तृप्त हो गया और उसकी जान बच गई। तृप्त होते ही कुत्ता अन्तर्धान हो गया। संत राबिया सिर के बाल उखड़ जाने के कारण लहुलुहान हो गई थीं और अब उन्हें पीड़ा भी महसूस हो रही थीं वह बार–बार मिन्नतें कर रहीं थीं– हे काबा शरीफ! मैं आपके पास कैसे आऊँ? अपनी नेक बंदी की पुकार अल्ला– ताला ने सुन ली, अचानक बियाबान जंगल रोशनी से जगमगा उठा। काबा शरीफ के पार्षद उस रोशनी में प्रकट हुए और बोले कि संत राबिया आपको काबा आने की जरूरत नहीं, खुदा खुद चलकर आपसे मिलने आ गए हैं। इससे सिद्ध होता है कि भक्त के पास भगवान स्वयं चले आते हैं। औरों की मदद करो .....

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश चकित रह गया, बोला– आप इतना भार क्यूं वहन करोगे? जैन बोला– मैं यह रकम उधार दूंगा। संस्था के लिये समय–समय पर गाड़ियां भाड़े पर लाते ही हैं, उनका भी भाड़ा तो चुकाना ही पड़ता है, इसी तरह मेरा भी पैसा थोड़ा–थोड़ा करते चुका देना। कैलाश को यह सुझाव अच्छा लगा। शीघ्र ही एक महेन्द्रा मार्शल जीप खरीद ली। जीप पर संस्था का नाम इत्यादि लिखवा कर बाहर खड़ी कर दी तो उसे देख – देख कैलाश का मन प्रसन्न हो जाता।

अंश - 170

संतुष्टि के भाव

11 वर्ष का शुभम्, गांव चिराउबेड़ा, जिला–सहारनपुर, उत्तरप्रदेश श्री शिवकुमार का पुत्र है। शुभम् जब 10 माह का था तभी बुखार में पोलियो हो गया। कई शहरों में दिखाया, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा।

एक रिश्तेदार ने –जो अपने बेटे का इलाज संस्थान में करवा चुके थे, उन्हें संस्थान के बारे में बताया। इस तरह संस्थान में पहुंचे। पांव की जांच के बाद शुभम् के पैर के तीन ऑपरेशन हुए। शुभम् शीघ्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा – श्री शिवकुमार इस सम्भावना से पूरी तरह सन्तुष्ट है।

कान के रोगों से कैसे बचें

कान में सनसनाहट रक्तचाप असामान्य होना, दवा की एलर्जी अथवा कान में वैक्स जमा होने के कारण होता है। जब एक या दोनों कानों में दर्द के साथ सुनने की क्षमता में कमी और मवाद आने जैसे लक्षण हों, तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए। प्रायः कान के तीव्र दर्द में मवाद आने के साथ पीड़ा कम हो जाती है, लेकिन यह शुभ लक्षण नहीं होता। यह अवस्था कान के मध्य भाग में संक्रमण, कान के पर्दे के क्षतिग्रस्त होने या अन्तकर्ण की अस्थियों एवं तंत्रिकाओं की खराबी के कारण हो सकती है। कभी–कभी कान में तेज दर्द के साथ सांस लेने एवं निगलने में कठिनाई अथवा ठंड लगकर बुखार आने जैसे लक्षण होते हैं। इसका कारण कान या गले का संक्रमण अथवा गले और मुंह का ट्यूमर हो सकता है।

कान में मवाद दोने पर :–

शुद्ध सरसों या तिल के तेल में लहसुन की कलियों को पकाकर 1–2 बूंद सुबह शाम कान में डालने से भी फायदा होता है। दशमूल, अखरोट अथवा कड़वे बादाम की तेल की बूंदे कान में डालने से बेहरेपन से लाभ होता है। ताजे गोमूत्र में एक चुटकी सेंधा नमक मिलाकर हर रोज कान में डालने से बेहरेपन में फायदा होता है। ढाक के पके हुए पीले पत्तों को साफ करके उस पर सरसो का तेल लगाकर गर्म करके उसका रस निकाल कर 2–3 बूंदे हर रोज सुबह–शाम कान में डालने से भी बेहरेपन में फायदा होता है।

करेले का बीज और उतना ही काला जीरा मिलाकर पानी में पीसकर 2–3 बूंदे दिन में दो बार कान में डालने से बेहरेपन में फायदा होता है।

कान में आवाज :

लहसुन व हल्दी को एकरस करके कान में डालने पर लाभ होता है कान बंद होने पर भी यह प्रयोग हितकारक है।

कान में कीड़े जाने पर :

दीपक के नीचे का जमा हुआ तेल अथवा शहद या अरण्डी का तेल या प्याज का रस कान में डालने पर कीड़े निकल जाते हैं।

कान के सामान्य रोग :

सरसों या तिल के तेल में तुलसी के पत्ते डालकर धीमी आंच पर रखें। पत्ते जल जाने पर उतारकर छान लें। इस तेल की दो–चार बूंदे कान में डालने से सभी प्रकार के कान दर्द में लाभ होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

देश काल परिस्थिति की घटनाएं हमारे मन को विचलित नहीं करनी चाहिए, और आज तक खबर है कि भारत में जो इसका फैलाव काफी कम है। सिंगल है। इटली में 3 गुणा है– इटली भी अपना है। वहाँ के महानुभाव भी अपने हैं, लेकिन वैज्ञानिक शोध आज एक समाचार पत्र में पढ़ी थी कि भारत में काफी कन्ट्रोल है। बहुत अच्छी बात है, ऐसा ही होना चाहिए। पूरे विश्व में कन्ट्रोल होना चाहिए। समाप्त हो जाना चाहिए, और हो जाएगा कुछ दिनों में समाप्त। प्रबल आशावान बने रहें। प्रबल धैर्यवान बने रहें।

हाँ, महाराज।

तूं सूरज है, पगले,
फिर क्यों अंधकार से डरता है।
तूं तो अपनी एक किरण से,
जग प्रदीप्त कर सकता है।।

हाँ, मन के जीते जीत सदा। मन को मजबूत रखना है। खूब आंनदित रहना है, और समय का सदुपयोग करना है। मैं तो शायद कर पा रहा हूँ इसलिए आप को निवेदन किया है। आप भी कर रहे होंगे। खूब समय का उपयोग करके अपनी आत्मशक्ति को बढ़ा दें। देह देवालय को जानने लग जावें विपश्यना ध्यान से। विकार को दूर करके अपने आप को चमका लें।

जैसे बर्तनों को चमकाया जाता है। अपने शरीर को शुद्ध करके चमका दो। सब अच्छा हो जाएगा। आप के साथ परमात्मा आप की सेवा। हाँ, सेवा धर्म महान वो जुड़ा हुआ है। बहुत अच्छा हो जाएगा।

आप सभी को मेरा और नारायण सेवा का, प्रशान्त भैया का सभी को सादर प्रणाम, मंगलकामनाएं। कमला जी का, वंदना जी का, जगदीश जी आर्य, देवेन्द्र जी सहित सभी साथियों का प्रणाम्! जय हो, जय श्रीकृष्णा।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 297 (कैलाश 'मानव')

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay | PhonePe | paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023